एक

समय अनजाने ही बहुत पीछे चला गया था। भूली-भटकी स्मृति अवचेतन में साकार हो रही थी। बरसों पुरानी बात का स्मृति पटल पर जैसे पुनर्मंचन हो रहा था। मेडिकल कॉलेज के हॉस्पिटल का स्टूडेंट वार्ड। पलंग पर लेटी हुई नीलिमा। दवाओं के असर से हरदम सोते रहने की इच्छा।

तभी उसे लगा था कि दरवाजे पर किसी ने आहट की है। आँखें खोलकर देखने की कोशिश की थी। कमरे का पर्दा हिला था। मुँदी हुई आँखों को खोलने की चेष्टा के साथ ही सामने आकृति स्पष्ट हो चली थी।
"कौन ! ईशू ?"

"आज आठ जुलाई है न !" होंठों पर मुस्कुराहट की रेखा लिए ईशू ने कहा था। होंठों से ज्यादा उसकी आँखें बहुत कुछ कह रही थीं। उसे लगा था कि ईशू की आँखें उसके बदन पर चिपक गई हैं। उसे जकड़ रही थीं···विनती कर रही थीं, वह आँखें। उसके शरीर के चारों ओर हलचल करती, रात के समुद्र की गरजती लहर की तरह उसके चारों ओर लिपट गई थीं। सिहरने लगी थी वह। उसका दिल चाहा था कि पैरों के पास से उठाकर वह चादर से गर्दन तक अपने को ढक ले। लेकिन हाथ-पैर मानो बांध दिए हों किसी ने। ऐसे में मन का बांध कोई तेज तूफान आकर तोड़ गया था।

ईशू का वही अंदाज़। करीने से सँवारे चमकीले बाल। चौड़ा माथा। अनुपात से रंचमात्र लम्बी नाक। आगे को निकली नुकीली ठोड़ी। पतली

गहरी मूछें। वह तब सोचा करती थी किसी की आंखें हँसती हैं— तो किसी के होंठ। किसी का पूरा चेहरा ही हँसता है। लेकिन ईशू की हँसी उसकी मूछों में छिपी थी। मुस्कुराने का काम उसकी मूछें करतीं और बोलने का काम आंखें बखूबी कर लेतीं। उन दिनों वह सोचा करती थी कि यह आदमी तो जनम ज़िंदगी अगर मौन रहे तो उसका काम चल जाए।

"आठ जुलाई ? तो क्या हुआ ?"

"मैंने सोचा अगर कोई परलय-उरलय होने वाला हो तो ! तुम यहां पलंग पर यूं ही पड़ी रह जाओगी। हम दोनों साथ-साथ ही कुछ इंतजाम करें उसका।"

उन दिनों भविष्य की सम्पूर्ण जानकारी को अपनी मुट्ठी में रखने का दावा करने वाले अनेक ज्योतिषियों ने घोषणा की थी कि आठ जुलाई को प्रलय होगा। उस दिन दुनिया का विनाश निश्चित है। बहुत बवेला मचा था इस घोषणा से। भविष्यवक्ता दलालों ने यजमानों की स्वर्ग में सीट रिजर्व कराने के लिए दान-दक्षिणा का सिलसिला शुरू कर दिया था। शहर के सेठों, व्यापारियों और धंधेबाजों ने पापों के शुद्धिकरण के लिए यज्ञ, हवन आदि शुरू करा दिए। यूं तो भगवान् है भी या नहीं, इस पर बहस की गुंजाइश हो सकती थी लेकिन अब वक्त बहुत कम था। मान लो, ऐन वक्त पर भगवान् निकल ही आए तो ? बेकार रिस्क लेने से कोई फायदा नहीं। आखिर व्यापारी हर पार्टी को चंदा देता है। यहां भी थोड़ा खर्चे की ही बात तो थी। प्रलय के आने पर कैसा-कैसा होगा ? कौन क्या करेगा ? आखिरी समय जानकर कौन क्या करना चाहेगा—इन सभी संभावित मुद्दों को लेकर दो दिन पहले उसके कई क्लास के साथी और ईशू वगैरह उसके कमरे में बैठकर हँसी-ठट्ठा करते रहे थे, जब वे सब उसे अस्पताल में देखने आए थे। ईशू उसी प्रलय की बात कर रहा था। अपने क्लास और यूनिवर्सिटी के अन्य साथियों के साथ वह भी खूब हँसी थी लेकिन उस समय ईशू का आना ! उसे भीतर तक छू गया था। ईशू ने पहली बार उसको छुआ था। उसके मन को छुआ था।

वह गम्भीर थी। ईशू भी गम्भीर हो गया था। बल्कि सकुचा-सा

गया था। सिकुड़ गया था भीतर से। अकेले उस तक आने के लिए उसने जो हिम्मत की थी, वह अब चुक रही थी और यह पस्त हिम्मती चेहरे पर स्पष्ट हो रही थी।

फिर वह मुस्कुरा दी थी। उसकी मुस्कुराहट ईशू के लिए राहत थी। वह आकर कमरे के अंदर पड़ी बैंच में बैठ गया था। उसका चेहरा फिर कुछ बोलने लगा था···

× × ×

घन घनन न् न् न्—घन—घनन···घंटे की हृदयविदारक आवाज़। नीलिमा के सीने पर जैसे किसी ने हथौड़े चलाए हों। उसकी आंखें खुल गईं। समय लगा उसे तय करने में कि वह कहां है? कौन से समय में है? घंटे की घनघनाहट अभी भी उसके कानों में गूंज रही थी जो, उसका वर्तमान था। बहुत गहरी नींद सो रही थी वह!

फिर कोई मुर्दा श्मशान में आया था। कॉलेज बिल्डिंग के ठीक पीछे इस शहर का श्मशान मैदान है। जब कोई मुर्दा आता है तो यह घंटा जरूर बजाया जाता है। न जाने कहां बंधा है यह घंटा कि कॉलेज कैम्पस के क्वार्टरों के भीतर एक ऐसी साफ और तीखी आवाज सुनाई पड़ती है। जरूर कोई मंदिर-उंदिर होगा सड़क के किनारे ही, सो श्मशान में घुसते ही सबसे पहले लोग घंटा ही बजाते हैं।

कॉलेज जॉइन करने के बाद की बात है। टीचर क्वार्टर्स में आए हुए दो तीन दिन ही हुए थे जब किसी ने यह बताया था कि पीछे ही श्मशान है। अक्सर जले मुर्दे की चिरौंध यहां क्वार्टरों तक आती है।

वह बहुत घबरा गई थी। कई दिन उसे नींद नहीं आई। नई जगह। अकेले का रहना। पूरे कमरे में अकेले सोना···उसे लगता कि रात में कहीं श्मशान से उठकर सारे भूत-प्रेत यहां कमरे में प्रेत-लीला न करें। न जाने कितनी अतृप्त आत्माएं भटकती होंगी चारों ओर। कभी-कभी वह कल्पना करती थी कि अगर यहीं, इसी कमरे में किसी तरह उसकी मौत हो जाए तो? एक और आत्मा बढ़ जाएगी उस झुंड में। सोच-सोच कर कभी उसकी आंखों में आंसू आ जाते और कभी वह डर से कांपती मुंह ढांपे पड़ी रहती। किसी दिन बहुत दिल घबराता, तो पड़ोस के

क्वार्टर में चली जाती। वहाँ सो रहती। लेकिन ऐसा भी कब तक चलता! अभी तो उसकी ज्यादा किसी से दोस्ती भी नहीं थी। फिर आदत भी तो डालनी थी।

खैर, अब तो इतने साल बीत गए। इस घंटे की भी आदत हो चली है जैसे, सवेरे-शाम मंदिरों में लगे लाउडस्पीकरों से आरती की आवाज़ या मस्जिदों से अजान के स्वर! दिनचर्या में इस घंटे की घनघनाहट भी शामिल हो गई है। इस वक्त तो इस घंटे ने ही उसे पीछे छूटी गलियों से ढूंढ़-खींचकर वर्तमान में लाकर खड़ा किया था। कालातीत घेरों से निकाल उसे ठोस ज़मीन का स्पर्श दिया था।

बरसात के बाद धुले स्वच्छ स्फटिक से नीले आसमान की तरह अब सब कुछ साफ था। ऊपर-नीचे उठती, तैरती लहरें अंत में जिस अथाह शून्य में समा जाती हैं, उस अनंत शून्य की तरह वर्तमान था, बिल्कुल बाधाहीन-भाररहित।

वह कॉलेज में अपने क्वार्टर में थी। गर्मियों की दोपहर में अजीब नशीली नींद आती है। लगता है कि ये दुनिया ज़हान छोड़कर सशरीर हम दूसरे ही लोक में चले गए हैं। समय का बंधन टूट जाता है और भूत, भविष्य और वर्तमान— सब गड्ड-मड्ड हो जाते हैं। लमहों का अहसास ही खत्म हो जाता है।

नीलिमा ने भरपूर जम्हाई ली और आलस की चादर उतार फेंकने की कोशिश में पर्दा हटाकर खिड़की से बाहर झांका। चौंधियाती तेज धूप की जगह अब सुरमई बादलों ने ले ली थी। बिजली चली गई थी और पंखा बंद हो गया था। शायद इसी वजह से वह दिवा-स्वप्न देखती न जाने कहाँ-कहाँ पहुँच गई थी। बाहर हवा ठंडी हो चली थी। पसीने की चिपचिपाहट में ठंडी हवा का झोंका उसे बहुत अच्छा लगा। इधर-उधर जोर से हिलते पेड़ों और दौड़ते बादलों को देखते-देखते उसके सामने पानी की बूंदे नाचने-थिरकने लगीं।

वह खिड़की के पास से हटकर फिर पलंग पर लेट गई। छत में टीन की बरसाती पर पड़ती पानी की बूंदों की टप्-टपा-टप्-टपा-टप् आवाज उसे बहुत बुरी लगती है। तीखी-सी चुभती आवाज़ दिल में उतर जाती

है। शुक्र है, पानी तेज हो गया और साथ ही टीन पर होती टप्-टप् की आवाज़ अब तेज होकर एकरस हो गई थी। उसने निश्चित होकर आंखें बंद कर लीं।

आठ जुलाई ! उसे फिर सपना याद आने लगा। उसने आंखें खोलकर कैलेंडर पर नज़र डाली। सचमुच ! आज भी आठ जुलाई ही तो है ! वह चिहुंक उठी। क्या उसके अचेतन में इसीलिए समयचक्र अचानक पीछे घूम गया था ! खींच ले गया था उसके मन को इतनी दूर—पीछे ! प्रकृति का अदृश्य संचालक। उससे भूल नहीं होती। आगे·· आगे···और आगे बढ़ना ही संसार का नियम है। यही कालचक्र की गति है। समय का नियम अंधा है। ज्योतिपुंज सूरज के कदम अंधे हैं। यहां कोई नहीं रुकता···कोई रास्ते में नहीं थमता। यहां कोई पछतावा काम नहीं आता। पीछे जाने की इजाज़त नहीं मिलती।

लेकिन मन की अपनी स्वतंत्र सत्ता है। यह मन इंद्रजाल जैसे छलावे खड़े करता है। सूरज के अंधे बैलों की तरह चलते प्रकाशपुंज के सामने यह नन्हा-सा मन वामन की तरह सीना तानकर चुनौती देता है। छलावा या इंद्रजाल ही सही ··कुछ समय के लिए इस अजेय कालचक्र को पीछे घुमा देता है। अनचाहे समय की लम्बाई को कपूर की तरह हवा में उड़ा मन को वहीं पहुंचा देता है जहां किसी मोड़ पर जिंदगी अटकी पड़ी है। जहां जिंदगी का एक पड़ाव अदृश्य तंतुओं से बंधा रेगिस्तानी हवाओं के जोर से रेत में डूबा पड़ा है।

यह कमज़ोर मन कब सुरसा जैसा विशालकाय रूप धारण कर ले ! कब तीनों लोकों को पैरों से नाप ले ! कुछ कहा नहीं जा सकता। मन की अतल गहराइयां आदमी के लिए हमेशा ही रहस्य बनकर रहेंगी। प्रकृति पर भले ही मनुष्य विजय प्राप्त कर ले···मन पर नहीं कर सकता। हर मन अपने आप में एक सृष्टि बसाए है। हर आदमी अपने आपमें एक दुनिया है।

गर्मी की छुट्टियों के बाद कॉलेज खुल गया था। आसमान सवेरे से ही बादलों से घिरा था। बरसात में घर से बाहर निकलना एक मुसीबत। क्या पहनो और क्या न पहनो। अभी तेज धूप है और सूती साड़ी पहन ली। पता चला कि लौटते-लौटते इतनी तेज बारिश में घिर गए कि साड़ी बदन पर चिपककर फिल्मी सिचुएशन पैदा कर रही है। सिंथेटिक पहनकर निकलो तो पता चला कि थोड़ी देर बाद ही बादल साफ और तेज चटक धूप पसीने में सराबोर कर रही है जिसमें ये सिंथेटिक कपड़े चिपककर और दुःखदायी हो रहे हैं। अरे, अपना क्या है ? कुछ ही पहन लो। कॉलेज कैंपस में ही टीचर क्वार्ट्स होने की वजह से मन ही नहीं करता कि ढंग से तैयार होकर कॉलेज जाओ। वही कॉलेज और वही घर। वातावरण में सवेरे से शाम तक कोई तब्दीली नहीं।

इसके अलावा अच्छी तरह ढंग से तैयार होने पर एक अजीब अपराध-बोध घेरने लगता है, नीलिमा को। लोग क्या कहेंगे ? एक तो इस तरह उसका अकेले रहना…उस पर बनाव श्रृंगार। लोगों की जबान को कौन रोक सकता है। अपने साथ के लोग ही क्या बख्शते होंगे उसे। अपने दूसरे साथियों के लिए दुनिया भर की कहनी-अनकहनी कह सकते हैं तो उसमें कौन से सुर्खाब के पर लगे हैं ! ऊँह ! कहने दो। औरतों के बीच नौकरी करेंगे तो यह कानाफूसी, स्टाइल की बातें तो बरदाश्त करनी ही पड़ेंगी।

लड़कों के किसी कॉलेज में होती तो साथ के अध्यापकों के बीच ही कौन-सी सुरक्षा की गारंटी होती ? लपक-लपककर आपके हिस्से के काम कर देंगे। सारी काम की जिम्मेदारी उठा लेंगे। अगर साधारण शिष्टाचारवश और सहयोगी होने के नाते थोड़ा मेलजोल हो गया तो पीठ पीछे आपको

दुनिया की सबसे चालू औरत साबित करने की कोशिश करेंगे। मजे की बात यह है कि जिससे आपकी ज्यादा निकटता होगी, वह आपको अधिक प्रामाणिक तौर पर चरित्रहीन बताएगा और प्रमाण के तौर पर स्वयं को पेश करेगा। मध्यवर्गीय समाज में गैर शादीशुदा या तलाकशुदा अलग रहने वाली औरतों के बारे में, खास तौर पर अगर वह जवान भी है, तो उसके लिए किसी भी तरह की बात कहना संभवतः हमारे लोकतांत्रिक अधिकारों में है। और इस अधिकार का इस्तेमाल करने से किसी को रोका नहीं जा सकता है।

सोचते-सोचते नीलिमा को हँसी आ गई। जो बात होनी ही है, जिसे रोका ही न जा सके, उसके बारे में फिर क्यों दिमाग खराब करना। विज्ञान का नियम समाज पर भी लागू होना चाहिए। जो दूरी अनन्त हो, जो मात्रा असीमित हो—उसका परिमाण या मूल्य फिर शून्य हो जाता है। इसीलिए परनिंदा के अथाह सागर में सब कहा—सुना, टोका-टाकी शून्य। कहीं कुछ नहीं। सब सामान्य।

यह क्या कम है कि महिला कॉलेज में अपने साथ के लोग सामने कुछ नहीं कहते। मिलने पर अच्छी बातें करते हैं···स्नेह दिखाते हैं। यही बहुत है। पीछे की कौन परवाह करेगा और कब तक करेगा! मर जायेंगे वरना यही सब सोचते-सोचते। सो मैडम नीलिमा! जीना है जहान में तो मुस्कुराइए और···आज यह कोटा की नई साड़ी पहनकर जाइए। देखिए, बादल तो छँटते-से नजर आ रहे हैं। फिलहाल पानी नहीं बरसेगा। आप भूल गईं! खुद को बेफिक्र और खुश रखना आपकी दिनचर्या में शामिल है।

× × ×

“नमस्ते भैन जी !” क्वार्टर से निकलते ही लाइब्रेरी के पास कॉलेज की नौकरानी रामवती के दर्शन हो गए।

“नमस्ते ! कहो रामवती ! ठीक तो रहीं छुट्टियों में ?”

“कहाँ भैन जी । हम तो बड़े परेशान रहे । लड़का हमारा छत पर से गिर गया । घर और अस्पताल दौड़ते रहे । बड़े बाबू ने एक दिन्न की छुट्टी ना दी ···” अपनी ही धुन में किस्सा बखानती रामवती आगे चली गई ।

पहला दिन । लड़कियाँ तो गिनी-चुनी ही दिख रही थीं । अभी तो परीक्षाफल ही नहीं आए थे ।

“बेहेनजी···छुट्टी की नमस्ते···”

नीलिमा ने घूमकर देखा । स्टाफ रूम की नौकरानी कैला देवी जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाती उसकी ओर आ रही थी । हर शब्द को भरसक खींचना और जोर-जोर से बोलना उसकी पुरानी आदत थी ।

“कैला—तुमसे कितनी बार कहा है कि इतनी दूर से मत चिल्लाया करो ।” नीलिमा ने झुँझलाते हुए कहा ।

“अरे, मैं समझी कि फिर आप चली जाएँगी स्टाप रूम में और हमारी सवेरे की नमस्ते रह जाएगी ।” कैला की आवाज़ जरा भी धीमी नहीं हुई ।

“देखा, हमारी ये बहन जी कभी गुस्सा न करतीं । हमेशा ऐसे हँस के नमस्ते लेतीं···” कैला किसी अदृश्य से उसका गुण बखान कर रही थी, जो बदस्तूर उसके कान में पड़ रहा था । बहुत चालाक है यह । हर साल छुट्टियों के बाद उसे एक साड़ी चाहिए । यह गुण बखान उसी की पूर्व भूमिका है ।

मुस्कुराती हुई नीलिमा स्टाफ रूम की ओर चल दी ।

स्टाफ रूम ! हमेशा की तरह गुंजायमान।

“हलो एवरी बॉडी !” नीलिमा की आवाज सुनकर एक क्षण को बातचीत का ज्वार हल्का पड़ा और फिर पूर्ववत् । वह रत्ना मुखर्जी के पास कुर्सी खींचकर बैठ गई। अन्दर वाली खिड़की के पास सोफे पर बैठी मिसेज माथुर दिख गईं। अकेले बैठी वह एक खुली किताब पर नज़र गड़ाए हुए थीं ।

“नमस्ते मिसेज माथुर ! अरे वाह, चश्मे का फ्रेम बदलवा लिया है आपने ! बहुत सूटकर रहा है आप पर ।”

“अजी नज़र बदले तब की बात है। लाख चश्मे बदलो, फ्रेम बदलो · ” मिसेज अग्रवाल बुदबुदाईं।

पास बैठी मिसेज मित्तल मुस्कुरा दीं। फिलहाल, वे एक पत्रिका से नया डिज़ाइन स्वेटर में उतारने में व्यस्त थीं ! उनकी लड़की की डिलेवरी अक्तूबर में होने वाली थी इसलिए अभी से वह तैयारियों में जुटी थीं।

“मैंने अभी एक मैगजीन में एक लेख पढ़ा था । उसके मुताबिक इन्हें बेहद कंजूस होना चाहिए ।” आशा चौहान ने बेहद गम्भीर स्वर में कहा। आवाज़ इतनी धीमी थी कि कोशिश करने पर ही कोई दूर बैठा सुन सकता था ।

“वो कैसे ? कभी इनसे दावत खाने का तो मौका आया नहीं कि पता चलता कि ये कंजूस हैं ।” रत्ना ने भोलेपन से पूछा ।

“अब जिसके चेहरे पर एक मुस्कान का आना भी मुश्किल हो, जिसके मुँह से ‘हलो’ तक न निकल सके उसे आप क्या कहेंगे ? उदार ? दानवीर ? अरे भाई, मनोविज्ञान में···”

“अब रहने दो तुम अपना मनोविज्ञान···” मिसेज मित्तल ने आँखें तरेरीं। सब लोग हँस पड़े ।

मिसेज माथुर के चेहरे पर शिकन नहीं थी। वे बदस्तूर किताब पर आँखें गड़ाए हुए थीं। प्रिसिपल ऑफिस अभी खाली था। जब तक

प्रिंसिपल नहीं आतीं, मिसेज माथुर की मज़बूरी थी स्टाफ रूम में बैठना। उनकी राय में यह गँवार, घरेलू औरतें जो इत्तफाक से टीचिंग में आ गईं, इस लायक ही नहीं कि इनके साथ मिक्सअप हुआ जाए। किताब सामने खुली पड़ी थी लेकिन उनका दिमाग कहीं और था। फिर उन्होंने किताब बंद कर दी। आशा चौहान ने उचककर देखा। मिल्स ऐंड बून सीरीज का कोई किशोर वय का प्रेम उपन्यास था। अपने पर्स से जापानी पंखा निकालकर वह अपने चेहरे पर पंखा झलने लगीं। कोने में बैठने की वजह से शायद हवा उन तक नहीं पहुँच रही थी।

"उफ ! कितनी गर्मी है।"

शोभना श्रीवास्तव उसी समय चिक उठाकर अंदर घुसीं।

"हाय शोभना।"

"हाय रत्ना। नमस्ते···सबको नमस्ते" बाकी लोगों पर एक नज़र दौड़ाते हुए शोभना ने सबका अभिवादन किया। "तो एक बार फिर··· हम सब मिल गए दो महीने की छुट्टियों के बाद···" और मेज पर पर्स रखती हुई नीलिमा और रत्ना के बीच कुर्सी खिसकाने लगी वह बैठने के लिए।

"मिस श्रीवास्तव, क्या आप अपना थोड़ा समय मुझे दे सकती हैं ?"

मिसेज माथुर ने खड़े होकर उसे हाथ से इशारा किया। शोभना अचकचा गई और बैठते-बैठते खड़ी हो गई।

"ऐई" रत्ना ने हाथ पकड़कर उसे बिठा दिया।" कायस्थवाद नहीं चलेगा। बैठ यहां पर।" फिर मिसेज माथुर की ओर मुखातिब होकर बोलीं—

"मिसेज माथुर माफ कीजिएगा। इस समय शोभना के साथ कुछ जरूरी बात डिसकस करनी है हमें। इसका इंतजार ही कर रहे थे हम।" फिर बुदबुदाई—"चमची कहीं की।"

"जब बड़ी बहन जी नहीं हों तो उसी वक्त इन्हें अपनी औकात का

पता चलता है ! जाकर आफिस में इंतजार करें उनका । यहां हमें क्यों बोर कर रही हैं ।"

"चुप रह यार !" शोभना ने उसका हाथ दबाया । "सुन रही हैं सब ।"

"सुनने दे ।" सर झटका रत्ना ने ।

"अच्छा बताओ, छुट्टियां कैसी कटीं । नीलिमा तुम कहां रहीं ?"

"कहीं नहीं गए अबकी । सारी छुट्टियां अपने इस महिला कॉलेज के क्वार्टर में ही गुजार दीं । सोचा अबकी यह अनुभव भी सही ।

"ताज्जुब ! गांव क्यों नहीं गईं मां के पास ?"

"हमारे एक रिश्ते के ताऊजी हैं, वे लिवा ले गए थे मां को अपने यहां । सुना था कि ताईजी बहुत बीमार हैं । अब वहां कहां जाती घिचिर-पिचिर में । इतना लम्बा-चौड़ा तो उनका परिवार है···।"

"और कोई जगह नहीं थी ? रत्ना मुस्कुराई ।

"और कोई जगह नहीं थी ।" नीलिमा ने चेहरा कठोर बनाते हुए असंपृक्त भाव से उसी लहजे में बात दोहरा दी । फिर तुरंत विषयांतर कर दिया उसने ।

"अरे हां, तुम्हारी वह जनजागरण समिति का क्या हुआ ? तीन महीने से ज्यादा गैप हो गया उसकी मीटिंग हुए । तुम्हारे सारे मेम्बर्स तो भाग गए होंगे ।" परिहास किया उसने ।

"दैट रिमाइंड्स मी । मैडम, आज शाम मीटिंग रख ली है हमने शोभना के घर, पांच बजे । भूलना मत और सुनो—शोभना आइसक्रीम खिलवाएगी मीटिंग के बाद ।" रत्ना ने आंख मारी नीलिमा की ओर देखकर ।

"जी हां," शोभना तुरंत बोली । रोज तो समिति के पीछे भागते फिरें । आए दिन इसके लिए चंदा दें । उसके बाद आइसक्रीम और खिलवाएं । जी नहीं । सिर्फ एक प्याली चाय और नो बिस्किट ।"

"अरे यार ! बहुत कंजूस हो गई है । चल बिस्किट मैं लेती आऊँगी । हमारी तरफ पंजाब बेकरी वाला अच्छे बिस्किट रखता है ।" रत्ना बोली ।

इसी समय कैला देवी स्टाफ रूम में आई और मिसेज माथुर के कान में कुछ फुसफुसाकर जाने लगीं । मिसेज माथुर के चेहरे का तनाव जैसे हल्का हुआ हो । अपना पंखा मोड़कर पर्स के अंदर रखा और उठकर चल दीं ।

"कैला—बड़ी बहन जी आ गईं क्या ?"

"आ गईं ।"

"तो तुम कहीं जा रही हो ? सबेरे से अब तो शकल दिखी है तुम्हारी । पानी तो पिलवाओ ।"

पानी ! अभी लो बहनजी ।" कैला पानी का गिलास लेकर मिसेज अग्रवाल की ओर लपकी । "चाय ले आऊँ कैंटीन से ?"

"रहने दे चाय । आज बड़ी बहन जी मीटिंग करेंगी । उन्हीं की चाय पिएँगे । क्यों मिसेज अग्रवाल ?" मिसेज मित्तल ने तुरंत सुझाया ।

"बड़ी बहन जी आ गई हैं । मिसेज अग्रवाल चल रही हैं ! जरा मिल आएँ । नमस्ते तो कर आएँ ।" मिसेज भटनागर उठंग हो कुर्सी से उठने का उपक्रम करने लगीं ।

सादी नमस्ते करेंगी मिसेज भटनागर या—बहनजी, छुट्टी की नमस्ते—ऐसे कहेंगी जैसे कैला ने हम लोगों से नमस्ते की आज ।"

"डोंट बी सिली । जाकर किसी से मिलना, नमस्ते करना—ये तो कॉमन कर्टसी है। इसमें क्या बुराई ।"

"नहीं तो फिर जाइए । लाइन लगाकर एक-एक करके नमस्ते करिए । अरे भाई, मीटिंग होगी तब सभी जाएँगे और मिलेंगे उनसे ।"

"लो, इसी नमस्ते पर एक किस्सा सुनो । एक दिन मैं आफिस गई थी किसी काम से । हमारी मिसेज प्रसाद आईं। बोलीं—बहनजी

नमस्ते । हमारी प्रिंसिपल मैडम बहुत मसरूफ थीं या दिख रही थीं, सो उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया । उन्होंने फिर नमस्ते दुहराई । अगेन नो रिप्लाई । तुम सोच सकती हो । फिर वह उनकी मेज के सामने खड़ी हो गई और दोनों जोड़े हुए हाथ उनके ठीक आंखों के सामने लाकर बोली—नमस्ते बहनजी, आप जब तक जवाब नहीं देंगी, तब तक हम तो आपको ऐसे ही नमस्ते करते रहेंगे ।"

सब हँसने लगे ।

"प्लीज आशा, रहने दो । बस करो अब ।" रत्ना हँसते-हँसते दोहरी हो रही थी । मिसेज अग्रवाल चश्मा उतारकर अपनी आंखें पोंछने लगीं ।

"बस कर" शोभना ने रत्ना का कंधा पकड़कर सीधा किया । "इसे हँसी आती भी कुछ ज्यादा है ।"

"क्या करूँ ! दरअसल, मिसेज भटनागर आप लोगों को हुकुम बजाने और कुर्सी की आंख-भौं देखकर बात करने की आदत पड़ गई है । वर्ना मिसेज प्रसाद को इस तरह नाटकबाज़ी करने की क्या जरूरत है ।"

"मिस रत्ना मुखर्जी ! बात जरा सोचसमझकर किया करो । आप लोगों से क्या मतलब है तुम्हारा ? मिसेज अग्रवाल की चश्मे से भेदती चमकीली आंखें रत्ना पर घूम गईं ।"

"मेरा मतलब है, आप लोगों के मुकाबिले अभी हम जैसे लोगों को कुछ ज्यादा आजादी है इसलिए हमारे और आपके व्यवहार में सोचने-समझने में फर्क हो सकता है । बहरहाल इट डजण्ट मैटर । आप लोग बड़ी बहनजी के कमरे में जाकर उन्हें नमस्ते करके आइए । उनके हाल-चाल पूछिए । उनके पति और बच्चों का स्वास्थ्य पूछिए और हां, उनके कुत्तों का हाल पूछना मत भूलिएगा वरना नाराज हो जायेंगी वह । चल नीलिमा । हम लोग कैंटीन में चाय पीकर आते हैं । चल शोभना—उठ ! हां, मिसेज अग्रवाल और मिसेज मित्तल—आप दोनों के लिए एक सूचना । आप लोग कह रहीं थीं न कि जनजागरण समिति का काम शुरू हो तो बताना । सो आज शोभना के घर पर मीटिंग है । पांच बजे शाम को आ जाइएगा ।"

"रिक्वेस्ट कर रही हो या हुकुम दे रही हो"—मिसेज मित्तल बोलीं।

"न रिक्वेस्ट और न हुकुम ! जस्ट इनफरमेशन। यह हम सबका काम है इसलिए सूचना मात्र है। अच्छा, मिलते हैं अभी फिर थोड़ी देर में !"

"भगवान् ! गई महारानी। लड़की है कि पटाखा।" मिसेज भटनागर बोलीं, जब वे तीनों कमरे से निकलकर बाहर चली गईं।

"अरे, एक ही ऐज ग्रुप की हैं। फिर अकेली हैं तीनों। न कोई जिम्मेदारी न कोई बोझ। जहाँ चाहे जाएँ—घूमें। जितना दिल चाहे बोलें—हँसें।" मिसेज अग्रवाल बोलीं।

"कुछ भी कहिए मिसेज अग्रवाल ! जिंदगी एनजॉय करना हो तो बस, शादी से पहले। शादी के बाद तो ऐसी भागमभाग हो जाती है कि बस। एक पैर घर में और एक कॉलेज में। छुट्टी हुई तो रेस लगती है घर के लिए। सारी ज़िदगी यूँ ही दौड़ते भागते निकल गई। ले लड़कियाँ कुछ काम कर रही हैं तो अच्छा है। इनके साथ मिलकर थोड़ा काम इनकी समिति में रहकर करेंगे, तो इस बहाने ही घर की झंझटों से निकलना होगा।"

"घर-गृहस्थी का अपना आनंद है। क्यों मिसेज भटनागर ! हाँ, मिसेज मित्तल, आप पहुँच रही हैं शाम को शोभना के घर ?"

"क्यों नहीं। हम दोनों से कहा है उन्होंने आने के लिए।"

"भई, मैं नहीं आ पाऊँगी आज। मेरी ननद के बच्चे आए हुए हैं कानपुर से !"

"अरे, तो मना क्यों नहीं कर दिया उसी वक्त। वैसे आपकी ननद के बच्चे तो बड़े हैं ! फिर एकाध घंटे की ही तो बात है।"

"फिर कभी ! इन लोगों का काम तो चलता रहेगा। अगली मीटिंग में सही।"

"यह तो आपने गड़बड़ किया। हमारा आपका साथ हो जाता। मुझे तो बहुत अच्छा लगता है, बाहर जाऊँ। लोगों के बीच कुछ काम करूँ। वर्ना रोज वही घर का रूटीन। वही कॉलेज का माहौल। मैं तो बहुत मोनोटनी महसूस करने लगती हूं।" मिसेज मित्तल बहुत भाव विभोर होकर बोलीं।

"हमें तो मोनोटनी नहीं होती। यहां घर के धंधे पूरे नहीं होते। मोनोटनी के लिए किसे फुर्सत है।" किंचित मुंह चढ़ाकर जवाब दिया मिसेज भटनागर ने। मिसेज अग्रवाल हंस पड़ीं।

‘मेरी यह समझ में नहीं आता कि शोभना और रत्ना का तो ठीक है, अकेली हैं अभी। शादी-ऊदी हुई नहीं लेकिन नीलिमा क्यों इनके पीछे लगी रहती है।" मिसेज भटनागर ने कुछ देर बाद सोचते हुए पूरी गम्भीरता से कहा।

"ये आपकी अगली रिसर्च का टॉपिक हो सकता है मिसेज भटनागर। इसका मनोवैज्ञानिक अध्ययन कर डालिए।" आशा चौहान, जो रत्ना वगैरह के साथ ही उठ गई थीं, अचानक नमूदार हुईं। मिसेज़ भटनागर की बात सुनकर उसका चुप रहना असम्भव था।

"आशा चौहान! आप कहां से कूद पड़ीं बीच में!" मिसेज मित्तल ने हंसी में बात को इधर-उधर करना चाहा।

"इनके बहुत पर निकल आए हैं। बहुत बोलने लगी हैं।" मिसेज अग्रवाल ने अपनी राय पेश की।

"असर किसका है! किनके साथ रह रही हैं आजकल, मालूम नहीं! क्यों? तुम नहीं गई चाय पीने।"

"मैंने आजकल चाय बंद कर रखी है। सामने देखो तो फिर मन नहीं मानता। इसलिए चाय देखती भी नहीं। पूर्ण ब्रह्मचर्य।"

"अजी ब्रह्मचर्य तो बेचारी नीलिमा कर रही है। सुना है इसके अकेलेपन पर ही तरस खाकर मैनेजमेंट ने इसे अपाइंटमेंट दिया था।"

"अच्छा! अकेलेपन पर तरस खाकर या उसके अकेलेपन के दूर-

गामी फायदों को ध्यान में रखकर !"

"मिसेज भटनागर ! आपकी पिछली रिसर्चों में नीलिमा के अपाइंटमेंट के बारे में कोई सूचना नहीं है ?"

"मेरे पास है।" मिसेज अग्रवाल मुस्कुराकर बोलीं। इसका अपाइंटमेंट हुआ मिनिस्टरी ऑफ इंडस्ट्रीज में किसी अफसर की सिफारिश पर, जो नीलिमा के रिश्तेदार होते हैं। अब अपने प्रेसिडेंट साहब को फैक्ट्री के लिए कुछ ज्यादा सुविधाएँ मिल गई होंगी। वर्ना दस अड़ंगे और लगते। इसलिए अपाइंटमेंट तो होना ही था।"

"तभी तो मैं कहूँ। नहीं तो सौ-सौ स्टूडेंट्स और सिर्फ एक लेक्चरर। कहाँ इकॉनामिक्स जैसा छोटा डिपार्टमेंट। पकड़-पकड़कर लड़कियाँ जुटाओ और उस पर ये एक्सट्रा अपाइंटमेंट।"

"इसका अपने हसबैंड से तलाक हो गया है क्या ?"

"क्या पता ! हो सकता है सिर्फ सेपरेशन हो। अपनी मर्जी से ही अलग हो गए हों। आजकल तो ये भी बहुत चलता है।"

"हमें क्या करना है मिसेज अग्रवाल। यह उनका मामला है।"

उसी समय देवीदीन चपरासी हाथ में नोटिस रजिस्टर लिए हुए दाखिल हुआ।

"क्या ले आए देवीदीन !" मिसेज भटनागर हुमककर बोलीं।

"बहनजी, नोटिस है। पढ़ लीजिए और साइन कर दीजिए।" उसने मेज के बीचोंबीच खुला रजिस्टर रख दिया।

"मिसेज मित्तल जरा जोर से पढ़ दीजिए।"

"ये नोटिस है या कोर्ट का सम्मन। मेरी समझ में नहीं आता कि हमारी मैडम को आफिशियल भाषा लिखने का ढंग कब आएगा। सुनिए, सत्र आरम्भ में होनेवाली मीटिंग के लिए सभी प्रवक्ता ग्यारह बजे प्राचार्या कक्ष में उपस्थित हों···हुकुमनामा है। चलिए आप सभी लोग उठिए। पौने ग्यारह तो हो रहे हैं। होइए उपस्थित।"